

बच्चो को सही शिक्षा दें

।त्ज्बम् ।च्म।त्स्ये फ्छ व्मैठ ।छवम्भ् । छ ।ज्बुछ ।स् व ।प्स् ७ डण्छ क्छ 11 श्रन्स्ल 1993

क्तण ।ण्जण्चंदकमल

क्तपदबपचंसए छडक्ब्र्चंददं

शिक्षा सिखाने की एक कला है। शिक्षा के प्रति मनुष्य ही नहीं अपितु सभी जीवधारी सदैव सचेत रहते हैं। मनुष्य इस पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ जीव है क्योंकि इसके अन्तर सही और गलत की समझने की शक्ति होती है। अपने विकसित मस्तिष्क से वह हमेशा ही दूसरों पर शासन करता आया है अर्थात् हम स्कूली शिक्षा पर ध्यान दें तो यह बात समझ में आएगी कि हम आज अपने बच्चों को केवल शासन करने के उद्देश्य से ही शिक्षा दे रहे हैं। प्री प्राइमरी कक्षा में 10-15 किो वनज की किताबों का बोझ लिए ये बच्चे आखिर कब तक इस बोझ को सम्भालेंगे। कहीं न कहीं तो उन्हें रुकना पड़ेगा। आखिर कौन सी शिक्षा हम उन्हें देने जा रहे हैं ? क्या उन पर इतना बोझ लादना जरूरी है कि वे अपने बचपन को ही भूल जाएं ?

इन सारे प्रश्नों का एक ही उत्तर हम अभिभावकों के पास होता है कि आज प्रतियोगिता ज्यादा बढ़ गई हैं तथा हमें अपने बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में सफल भी तो बनाना है। लेकिन यह बात जचती नहीं है। बच्चों की तुलना हम गाय के उस बछड़े से नहीं कर सकते हैं जिसको कि हम बचपन से ही हल चलाने का प्रशिक्षण देना शुरू कर देते हैं। बच्चों की अपनी एक अलग पहचान है। हम बच्चे को अपनी पहचान बनाने के लिए उपयोग कर रहे हैं। यह ठीक है कि बच्चों में सही या गलत पहचानने की सक्षमता नहीं होती है तथा अभिभावक होने के नाते हमें अपना कर्तव्य निभाना पड़ता है पर क्या हम यही कर्तव्य का निर्वाह कर पा रहे हैं। घर में बैठकर बच्चों से कहलवाना कि पापा पापा यह नहीं है! सिगरेट पीते हुए बच्चों को बतलाना कि सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ऐवी बहुत सी शिक्षाएं जाने-अनजाने में हम अपने बच्चों को दे रहे हैं और साथ ही यह भी कहने में नही हिचकिना रहे है कि बच्चों के ऊपर इस लिए बोझ लादे जा रहे हैं ताकि वह प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो पावें।

मेरा यह विचार नहीं है कि बच्चों को हम पढ़ाएं नहीं, लेकिन बच्चों से उनके बचपना छीनने का हमें कोई अधिकार नहीं है। आज कल टी.वी. पर सुबह के प्रसारण में एक धारावाहिक का प्रसारण किया जा रहा है जिसका शीर्षक है 'क्या बनोगे' बच्चों ? समुच्च यह अभिभावकों की एक तमन्ना है जो यह सोचते हैं कि वे जो स्वयं न बन पाए अपने बच्चों को बना लेंगे, बिना यह सोचे समझे कि बच्चे की रुचि किसमें है बच्चे में अपना कैरियर तलाश करना उचित नहीं है। मृग तृष्णा में पानी की तलाश उचित नहीं है क्योंकि एक बार मनोबल गिर जाने पर पुनः उसे उठाने में समय लगेगा।

बच्चों भविष्य के मीठे सपने लिए हम स्कूल जाते हैं और हम उन्हें बराबर यह कह कर डराते रहते हैं कि इस कठिन दुनिया को पार करने के लिए तुम्हें पढ़ाई में कठिन परिश्रम करना पड़ेगा। धीरे धीरे उन्हें इस दुनिया और हमारे समाज से ही घृणा उत्पन्न हो जाती है क्योंकि वे सोचते हैं कि इसी समाज के कारण हमारा बचपन हमने छीना जा रहा है। यह घृणा उन्हें असामाजिक कार्यों के लिए प्रेरित कर देती है। यहां हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्कूल ही वह जगह है जहां से सामाजिक कुरीतियों की शुरुआत होती है। समाज में पढ़ते हुए आज अपराध इस बात की पुष्टि भी कर रहे हैं।

शिक्षा को बच्चों के साथ चलना चाहिए न कि बच्चों को शिक्षा के साथ। हम बच्चों को यह भी तो समझा सकते हैं कि अच्छे नागरिक बनने के लिए तुम्हें शिक्षित होना जरूरी है तथा शिक्षा ही वह हथियार है जिसको लेकर तुम सामाजिक कुरीतियों को खत्म कर सकते हो तथा समाज को अच्छी राह दिखा सकते हो। बच्चों का मस्तिष्क तो टेप की तरह होता है। कोई भी बात जो उनके बाल सुलभ भावों को भरेगा देगा उसे वह कभी भी भूला नहीं पाएगा।

शिक्षा शास्त्रियों की बात पर हम अगर थोड़ा भी विश्वास कर सकते तो आज यह लेख लिखने की नोबत ही ना आती। आज हम अगंहीन हो रहे हैं क्योंकि हम यह नहीं समझ पा रहे हैं कि हमें अपने बच्चों को क्या पढ़ाना है। बढ़ते हुए किताबी बोझ को कम करने के बदले हम उसे और बढ़ाते जा रहे हैं। क्योंकि सरकार की नजर में शिक्षा ही यह क्षेत्र है जहां अत्याधिक, बदलाव की जरूरत है।

– डॉ. ए.के. पाण्डेय